International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 10-10-2025, Accepted: 09-11-2025, Published: 24-11-2025
Volume 11, Issue 6, 2025, Page No. 83-86

तुलसीदास तथा भारतीय आध्यात्मिकता: भक्ति, करुणा एवं मोक्ष की अवधारणाओं का विश्लेषण

विशाल प्रताप मित्र
हिंदी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
प्रस्तुत लेख तुलसीदास की आध्यात्मिक चिंतन–परंपरा का विश्लेषण करते हुए भक्ति, करुणा एवं मोक्ष की उन अवधारणाओं को समझने का प्रयत्न करता है जिन्होंने भारतीय धार्मिक चेतना, सामाजिक नैतिकता तथा व्यक्तिगत आत्मविकास की दिशाओं को गहनता से प्रभावित किया है। रामचरितमानस में प्रतिपादित भक्ति केवल ईश्वर–समर्पण का मार्ग मात्र नहीं अपितु वह व्यक्ति को भीतर से रूपांतरित करके उसके व्यवहार नैतिक संकल्पों और सामाजिक उत्तरदायित्वों को नया आकार भी देती है। इसी प्रकार करुणा जो तुलसीदास के काव्य और दर्शन का केंद्रीय तत्व है, मानवता की आधारशिला के रूप में प्रस्तुत होती है तथा समाज में दया, सहानुभूति एवं परस्पर सहयोग की संस्कृति को विकसित करती है। मोक्ष के संबंध में तुलसीदास का दृष्टिकोण शुद्ध दार्शनिक विमर्श न होकर एक व्यवहारिक जीवन–दर्शन के रूप में उभरता है जिसमें भक्ति, कर्म, धर्म एवं अंतः शुद्धि एक–दूसरे के पूरक रूप में दिखाई देते हैं। यह लेख दिखाता है कि तुलसीदास की आध्यात्मिकता न केवल भक्तिकालीन समाज की आवश्यकताओं को व्यक्त करती थी बल्कि आधुनिक जीवन के तनाव, मूल्य–संकट, आध्यात्मिक रिक्तता के संदर्भ में भी अत्यंत प्रासंगिक बनी हुई है। इस प्रकार यह लेख तुलसीदास के चिंतन को समकालीन भारतीय समाज के संदर्भ में नए अर्थों और संभावनाओं के साथ पुनर्पाठित करता है।

मूल शब्दः तुलसीदास, भारतीय आध्यात्मिकता, भक्ति, करुणा, मोक्ष, रामचरितमानस, नैतिकता, जीवन–दर्शन

प्रस्तावना

तुलसीदास भारतीय आध्यात्मिक–सांस्कृतिक चेतना के ऐसे महामनीषी हैं जिनकी काव्य–परंपरा ने न केवल भक्तिकाल के साहित्यिक प्रवाह को पुष्ट किया अपितु भारतीय जीवन–दर्शन, नैतिकता, लोकमानस आदि को भी स्थायी रूप से प्रभावित किया। उनका महाकाव्य रामचरितमानस भारतीय समाज में धर्म, भक्ति एवं आचार–व्यवहार हेतु एक जीवंत मार्गदर्शक के रूप में प्रतिष्ठित है और जनसाधारण की भाषा में आध्यात्मिक ज्ञान को सुलभ बनाने का उनका प्रयास भक्ति–आंदोलन की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धियों में माना जाता है (शर्मा, 2002)। भारतीय आध्यात्मिक परंपरा, जो वेद, उपनिषद, पुराण, स्मृतियों तथा भक्तिधारा की लंबी ऐतिहासिक यात्रा से गुज़रकर विकसित हुई, आत्मा–परमात्मा संबंध, धर्म, मोक्ष एवं करुणा के सिद्धांतों पर आधारित है। इस व्यापक परिप्रेक्ष्य में तुलसीदास का योगदान इसलिए भी विशिष्ट है कि उन्होंने आध्यात्मिक साधना को लोकजीवन की वास्तविकताओं से जोड़ते हुए भक्ति को जन–संस्कृति का हिस्सा बना दिया। ऐतिहासिक रूप से देखा जाए तो 16वीं सदी का उत्तर भारत राजनीतिक अस्थिरता, सामाजिक विघटन के साथ ही सांस्कृतिक अनिश्चितताओं से घिरा हुआ था; ऐसे समय में तुलसीदास का आध्यात्मिक संदेश समाज को नैतिक संबल, धार्मिक स्थिरता के साथ साथ सांस्कृतिक एकता प्रदान करने वाला सिद्ध हुआ (द्विवेदी, 1999)। इस लेख का उद्देश्य यही समझना है कि तुलसीदास की भक्ति, करुणा एवं मोक्ष की अवधारणाएँ भारतीय आध्यात्मिकता को किस प्रकार नया स्वर देती हैं तथा वे समकालीन समाज में कितनी प्रासंगिक हैं। अध्ययन की पद्धति मुख्यतः पाठ विश्लेषण और व्याख्यात्मक दृष्टिकोण पर आधारित है जिसके अंतर्गत रामचरितमानस के प्रमुख प्रसंगों, संवादों तथा तुलसीदास की दार्शनिक धारणाओं का अर्थ–समीक्षात्मक विश्लेषण किया गया है। प्रस्तुत लेख यह मानता है कि तुलसीदास की आध्यात्मिकता केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं है अपितु वह व्यक्ति के आंतरिक विकास, सामाजिक नैतिकता और सामूहिक कल्याण को केंद्र में रखती है और इसीलिए आज भी उनकी दृष्टि भारतीय समाज के सांस्कृतिक–आध्यात्मिक ढाँचे को समझने में अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

तुलसीदास की आध्यात्मिक पृष्ठभूमि

तुलसीदास की आध्यात्मिक पृष्ठभूमि का मूल स्रोत उत्तर भारतीय भक्ति आंदोलन का वह ऐतिहासिक काल है जब निर्गुण और सगुण भक्ति दोनों धाराएँ भारतीय समाज में आध्यात्मिक पुनरुत्थान का कार्य कर रही थीं। कबीर एवं रैदास जहाँ निराकार ईश्वर की अनुभूति पर बल देते थे, वहीं रामानंदी परंपरा सगुण–साकार भक्ति की प्रतिनिधि थी जिसकी सबसे सशक्त कड़ी तुलसीदास थे (हॉले, 2015)। इसी संदर्भ में तुलसीदास ने रामभक्ति को न केवल धार्मिक अनुभव के रूप में बल्कि सामाजिक–नैतिक परिवर्तन के साधन के रूप में प्रस्तुत किया। जब 16वीं सदी में उत्तर भारत राजनीतिक उथल–पुथल एवं सामाजिक अस्थिरता से घिरा था तब तुलसीदास का यह संदेश "सियाराममय सब जग जानी, करउँ प्रनाम जोरी जुग पानी" समाज को आध्यात्मिक समानता, सह–अस्तित्व के साथ ही पारस्परिक करुणा की ओर ले जाता था। तुलसीदास का योगदान केवल रामचरितमानस की रचना तक सीमित नहीं था अपितु उन्होंने भक्ति को कठिन दार्शनिक विमर्श से निकालकर लोकभाषा में सरल, सुलभ, जीवन–सापेक्ष बनाया (शुक्ल, 2003)। उनके आध्यात्मिक दर्शन में ईश्वर सर्वव्यापी, सर्वहितकारी एवं करुणामय सत्ता है यथा "दैहिक दैविक भौतिक तापा, रामराज नहिं काहुहि व्यापा" जो मनुष्य के जीवन को धार्मिक ही नहीं बल्कि सामाजिक–नैतिक सुरक्षा भी प्रदान करता है। तुलसीदास के लिए मानव–ईश्वर संबंध प्रेम, समर्पण एवं विश्वास पर आधारित है; उनके यहाँ ज्ञान–कर्म–भक्ति तीनों जीवन की आध्यात्मिक पूर्णता के आवश्यक आधार हैं। वे भक्ति को आंतरिक शुचिता, विनय, सेवा आदि का मार्ग मानते हैं जिसका सार स्वयं उन्होंने इस प्रकार दिया "भय बिनु होइ न प्रीति", अर्थात प्रेम और भक्ति विनय, अनुशासन और नैतिक दृढ़ता पर आधारित हैं। उनकी भाषा–नीति भी उतनी ही क्रांतिकारी थी; उन्होंने अवधी जैसी लोकभाषा में आध्यात्मिक विचार व्यक्त करते हुए धर्म को उच्च वर्ग की सीमा से निकालकर जनसाधारण की सांस्कृतिक चेतना का हिस्सा बना दिया (पोलॉक, 2006)। यह एक प्रकार से आध्यात्मिक लोकतांत्रिकरण था,जिसने भारतीय समाज की सांस्कृतिक एकता और आध्यात्मिक समरसता को नई शक्ति दी। इस

प्रकार तुलसीदास की आध्यात्मिक पृष्ठभूमि हमें यह स्पष्ट करती है कि वे भक्ति आंदोलन की वैचारिक परंपरा में स्थित होते हुए भी उसे नई मानवीय गहराई, सामाजिक विस्तार एवं भाषाई सरलता के साथ पुनर्परिभाषित करते हैं जो उन्हें भारतीय आध्यात्मिकता का सबसे प्रभावशाली स्वर बनाती है।

रामचरितमानस में भक्ति की अवधारणा

रामचरितमानस में तुलसीदास की भक्ति–दृष्टि भारतीय आध्यात्मिकता को एक नए मानवीय और नैतिक आयाम के साथ प्रस्तुत करती है जिसमें भक्ति केवल ईश्वर–प्राप्ति का साधन नहीं अपितु जीवन–शुद्धि, व्यक्तित्व–नियंत्रण तथा सामाजिक समरसता का मार्ग बन जाती है। तुलसीदास द्वारा प्रतिपादित नवधा–भक्ति का स्वरूप इस अवधारणा की पहली एवं सबसे महत्वपूर्ण कड़ी है जिसे शबरी के वचनों के माध्यम से अत्यंत सरलता से परिभाषित किया गया है श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वंदन, दास्य, सख्य और आत्मनिवेदन। भक्ति का यह नव–रूप केवल साधना की तकनीक नहीं बल्कि मनुष्य के भीतर एक नैतिक अनुशासन तथा आंतरिक पवित्रता जगाने का साधन है। तुलसीदास लिखते है "नवधा भक्ति कहौं तोहि पाहीं..." जिससे स्पष्ट होता है कि उनके लिए भक्ति व्यक्ति के भावलोक एवं कर्मलोक दोनों को एक साथ रूपांतरित करने वाली शक्ति है। श्रवण–कीर्तन भक्ति के माध्यम से साधक न केवल ईश्वर के गुणों को अपने भीतर उतारता है अपितु वह समाज के प्रति भी सहृदय, विनम्र एवं दयालु बनता है। स्मरण का अभ्यास व्यक्ति को मानसिक अनुशासन देता है और तुलसीदास इसे मन की चंचलता पर विजय का माध्यम मानते हैं अर्थात राम–नाम का स्मरण मन को स्थिर एवं पवित्र करता है। भक्ति का सामाजिक–मनोवैज्ञानिक पक्ष तुलसीदास की आध्यात्मिकता को एक व्यापक मानवीय आधार प्रदान करता है। प्रेम, समर्पण तथा शरणागत भावना तुलसीदास की भक्ति का मूल है जहाँ प्रेम ईश्वर से मात्र भावनात्मक लगाव नहीं अपितु नैतिक अनुशासन और आत्म–नियंत्रण की शक्ति बनकर उभरता है। तुलसीदास स्पष्ट करते हैं कि करुणामयी कृपा भी तभी मिलती है जब साधक के भीतर निष्कपट प्रेम हो। भक्ति मनुष्य के मनोवैज्ञानिक तनावों को भी शांत करती है; शरणागति की अवस्था व्यक्ति को जीवन की अनिश्चितताओं से मुक्ति देती है तथा उसे एक आंतरिक शक्ति प्रदान करती है। तुलसीदास ने बार–बार यह कहा है कि भक्ति दीनता नहीं बल्कि एक ऐसी विनय है जो मनुष्य के अहंकार को भंग करती है यथा "जहँ नृप होइ दीन हित, तहँ न करिअँ अघ बोल" और समाज में विनम्रता तथा सदाचार के आदर्श को स्थापित करती है। व्यक्ति का नैतिक परिवर्तन भक्ति का सबसे अनिवार्य परिणाम है; रामचरितमानस में जो पात्र भक्ति के मार्ग पर चल पड़ते हैं, वे स्वभावतः हिंसा, क्रोध, मत्सर, छल और मोह से मुक्त होकर अधिक मानवीय बन जाते हैं। समकालीन समाज के संदर्भ में तुलसीदास की भक्ति–दृष्टि अत्यंत प्रासंगिक हो जाती है जहाँ सामाजिक एकता, सांस्कृतिक सह–अस्तित्व तथा नैतिक पुनरुत्थान की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक है। तुलसीदास भक्ति को सामाजिक विभाजनों के अंत का मार्ग मानते हैं "सियाराममय सब जग जानी" जिसमें समाज की विविधताओं को एक ही चेतना में बाँधने की क्षमता है। भक्ति व्यक्ति को सामूहिक कल्याण की भावना से प्रेरित करती है एवं सांस्कृतिक सामंजस्य की भूमि तैयार करती है। रामचरितमानस में वर्णित भक्ति समाज की उस संरचना का आदर्श प्रस्तुत करती है जहाँ धर्म किसी जाति, वर्ग अथवा भाषा का बंधक नहीं अपितु सार्वभौमिक मानव–मूल्यों का आधार है। तुलसीदास ने लोकजीवन में भक्ति का उपयोग केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं रखा बल्कि उन्होंने इसे लोकभाषा, लोकरीति और लोकसंस्कृति से जोड़कर एक जीवंत सामाजिक शक्ति में बदल दिया। भक्ति ग्राम्य जीवन से लेकर शहरी समाज तक मानव व्यवहार, परस्पर सहयोग और नैतिकता का आधार बनती है। आधुनिक परिप्रेक्ष्य में तुलसीदास की भक्ति व्यक्ति को तनाव, सामाजिक विघटन और मूल्यों के संकट से मुक्ति दिलाने वाली शक्ति के रूप में सामने आती है यह प्रेम, करुणा, सहयोग एवं नैतिक साहस पर आधारित एक आध्यात्मिक जीवन–पद्धति है। इस प्रकार रामचरितमानस की भक्ति आज भी भारतीय समाज में सामाजिक एकता, सांस्कृतिक निरंतरता और आध्यात्मिक शांति का मार्ग प्रशस्त करती है।

तुलसीदास के काव्य में करुणा की अवधारणा

तुलसीदास के काव्य में करुणा वह आध्यात्मिक–नैतिक सूत्र है जो न केवल राम के चरित्र को परिभाषित करता है बल्कि सम्पूर्ण रामचरितमानस को धर्म, मानवता एवं न्याय के संतुलित दर्शन में रूपांतरित कर देता है। तुलसीदास के राम दयालु, करुणामयी होने के साथ ही लोकहितैषी ईश्वर का आदर्श रूप हैं ऐसा रूप जिसमें करुणा शक्ति नहीं बल्कि प्रेम और धर्म का मूलभूत तत्व बन जाती है। तुलसीदास राम की कृपा और संवेदना को ईश्वरीय न्याय का केंद्र माना है। करुणा का धार्मिक आयाम तुलसीदास के काव्य में इस प्रकार प्रकट होता है कि राम व्यक्ति को केवल पाप से मुक्त नहीं करते अपितु उसे आत्मिक संतुलन, नैतिक स्थिरता तथा सहृदयता का मार्ग भी दिखाते हैं। राम का चरित्र इस बात का प्रमाण है कि धर्म का मूल भय अथवा दंड नहीं बल्कि करुणा, लोकहित एवं सद्भाव है "धर्म मूल करुणा पर आशा", यह पंक्ति इस विचार को अत्यंत स्पष्ट करती है। तुलसीदास के अनुसार करुणा वही शक्ति है जो धर्म को सामयिक कठोरता से मुक्त कर उसे जीवंत, मानवीय, लोकानुकूल बनाती है। करुणा का मानवतावादी पक्ष तुलसीदास की आध्यात्मिकता को व्यापक सामाजिक अर्थ देता है। तुलसीदास समाज के समस्त प्राणियों में समान आत्मा की उपस्थिति को स्वीकार करते हुए 'सर्वभूत हित' को जीवन का सर्वोच्च आदर्श मानते हैं। वे लिखते हैं "परहित सरिस धर्म नहिं भाई, पर पीड़ा सम नहिं अधमाई" जिसमें करुणा एवं परोपकार को सर्वोच्च धर्म तथा पीड़ा पहुँचाने को सबसे बड़ा पाप बताया गया है। यह दृष्टिकोण उनकी भक्ति–दृष्टि को नैतिक व्यवहार, सामाजिक संवेदना के साथ ही मानवीय कर्तव्य से जोड़ देता है। दया, सेवा और विनम्रता तुलसीदास के अनुसार न केवल आध्यात्मिक साधना के अंग हैं बल्कि समाज के भीतर सामूहिक जीवन की नींव भी हैं। करुणा मनुष्य के भीतर अहंकार का शमन करती है और उसे दूसरों के कष्ट के प्रति संवेदनशील बनाती है; इसी कारण वे बार–बार विनम्रता को सर्वोच्च गुण बताते हैं यथा "विनय न मानत जलधि जड़" जिसमें विनय की शक्ति को दुराग्रह और कठोरता पर विजय दिलाने वाली बताया गया है। तुलसीदास का यह मानवतावादी करुणा–दर्शन इस विचार पर आधारित है कि समाज का वास्तविक उत्थान तभी संभव है जब व्यक्तियों के भीतर सेवा, सहयोग, सौहार्द की भावना विकसित हो। करुणा एवं न्याय का संतुलन तुलसीदास के आध्यात्मिक दर्शन की एक विशिष्ट पहचान है जिसमें ईश्वर की कृपा और दंड–व्यवस्था एक–दूसरे के विरोधी नहीं अपितु परस्पर पूरक मानी गई हैं। रामचरितमानस में राम दंड देने से पहले व्यक्ति को सुधारने एवं क्षमा करने का अवसर देते हैं; उनका दंड प्रतिशोध नहीं बल्कि समाज रक्षा का माध्यम है। तुलसीदास संकेत देते हैं कि न्याय में करुणा का सम्मिलन ही धर्म की वास्तविक आत्मा है "जोगु दंडु तजहिं अभिमानी, करहिं प्रेम बिनय जिमि पानी" अर्थात दंड का उद्देश्य अहंकार का नाश और प्रेम का उत्थान है। रामराज्य तुलसीदास के काव्य में करुणा–आधारित शासन प्रणाली का आदर्श मॉडल है जहाँ शासक और प्रजा के बीच संबंध न्याय, सेवा और परस्पर संवेदना पर आधारित है "दंड नीति भ्रम बिनय प्रियो, करुनामय सुभाउ रमापति को"। रामराज्य में शासन का मूल तत्व कठोर दमन नहीं, करुणामय न्याय है जो

कमजोरों की रक्षा करता है और शक्तिशाली को उत्तरदायित्व का बोध कराता है। यह विचार आज के लोकतांत्रिक समाज में भी अत्यंत प्रासंगिक है, जहाँ शासन व्यवस्था को दंडात्मक नीति के बजाय संवेदनशील न्याय की ओर उन्मुख होने की आवश्यकता है। समकालीन समाज में तुलसीदास का करुणा–दर्शन मनुष्यों के बीच बढ़ती दूरी, सामाजिक विभाजन और मूल्य–संकट के बीच एक सार्वभौमिक समाधान की तरह सामने आता है जो यह संदेश देता है कि करुणा केवल आध्यात्मिक साधना नहीं अपितु सामाजिक समरसता, न्याय और मानवीय सभ्यता की आधारशिला है।

तुलसीदास की मोक्ष–दृष्टि

तुलसीदास की मोक्ष–दृष्टि भारतीय आध्यात्मिक परंपरा का एक ऐसा अद्वितीय रूप प्रस्तुत करती है जिसमें मोक्ष केवल पारलौकिक मुक्ति मात्र का विषय नहीं अपितु मानव–जीवन के नैतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक उत्थान की एक समग्र प्रक्रिया बनकर उभरता है। तुलसीदास के अनुसार मोक्ष का मार्ग ज्ञान–भक्ति–वैराग्य की त्रिवेणी से निर्मित होता है ज्ञान मन की अशुद्धियों को दूर करता है, वैराग्य विषय–वासनाओं से मुक्त करता है और भक्ति ईश्वर के प्रति प्रेम तथा समर्पण की पराकाष्ठा है। वे लिखते हैं "बिनु हरि भजन न जाहिं कलेसा" जो स्पष्ट करता है कि भक्ति के बिना कोई आध्यात्मिक साधना पूर्ण नहीं। तुलसीदृष्टि में मोक्ष केवल देह–त्याग के बाद मिलने वाली मुक्ति नहीं बल्कि जीवन के भीतर नैतिक शुद्धि, मन की निर्मलता और कर्तव्य–पालन की सच्ची भावना है। उनका यह विचार दर्शाता है कि ईश्वर के गुण, नाम और कथा से मनुष्य अपने भीतर वह शांति और निर्मलता अर्जित करता है, जो मोक्ष का आरंभिक स्वरूप है। कर्म, धर्म और मोक्ष का संबंध तुलसीदास के काव्य में अत्यंत संतुलित तथा व्यावहारिक रूप में प्रकट होता है। उनका जीवन–दर्शन यह मानता है कि धर्म केवल अनुष्ठान नहीं अपितु जीवन–धर्म है वह आचरण जो व्यक्ति को सामाजिक कर्तव्य, नैतिक जिम्मेदारी और आत्मिक गरिमा से जोड़ता है। वे कहते हैं "परहित बस जिनके मन माहीं, तिन्ह कहूँ जग दुर्लभ कछु नाहीं" अर्थात धर्म वह है जो परहित को केंद्र में रखता है। तुलसीदास के अनुसार मोक्ष तभी संभव है जब व्यक्ति लोक–व्यवहार में धर्म का पालन करे और अपने सामाजिक दायित्वों का निर्वाह कर नैतिक संतुलन बनाए। मोक्ष का मार्ग कर्मों से अलग नहीं बल्कि उन्हीं कर्मों में निहित है जो निष्काम, सहृदय और न्यायपूर्ण हों। इसीलिए रामचरितमानस में राम को 'धर्म के मूर्त रूप' के रूप में प्रस्तुत किया गया है जिनके कर्म स्वयं मोक्ष का मार्ग दिखाते हैं। इस प्रकार तुलसीदास मोक्ष को सामाजिक और नैतिक जीवन से पृथक नहीं मानते बल्कि उसका आधार मनुष्य के दैनंदिन व्यवहार में छिपा हुआ देखते हैं। तुलसीदास की मोक्ष–दृष्टि का सबसे प्रमुख पहलू उनकी भक्ति–प्रधान मुक्ति अवधारणा है। उनके लिए भक्ति ही वह सहज मार्ग है जो जटिल योग–साधनाओं, कठिन तप और दार्शनिक तर्कों से अधिक सुलभ और प्रभावी है। वे बार–बार शरणागति को मोक्ष का मूल बताते हैं जिससे स्पष्ट होता है कि ईश्वर–शरण ही दैविक कृपा और आत्मिक मुक्ति का वास्तविक द्वार है। नाम–स्मरण तुलसीदास के अनुसार मोक्ष का सबसे सरल और शक्तिशाली साधन है जिसमें राम–नाम को अमृत के समान बताया गया है। तुलसीदास के लिए राम–कथा केवल कथा नहीं बल्कि एक आंतरिक साधना है, जिसका श्रवण मन को निर्मल करता है और व्यक्ति को मोह, क्रोध, लोभ और अहंकार जैसे बंधनों से मुक्त कर देता है। उनका सहज मोक्ष–मार्ग यह मानता है कि ईश्वर का स्मरण, कथा का श्रवण और गुणगान का अभ्यास मनुष्य को भीतर से रूपांतरित करता है और उसे जीवन के संघर्षों में धैर्य, संतोष और संतुलन प्रदान करता है। इस प्रकार तुलसीदास की मोक्ष–दृष्टि में कठोर साधनाएँ नहीं अपितु प्रेम, विश्वास, विनय, परहित एवं भक्ति का सहज मार्ग ही परम सत्य की उपलब्धि का साधन बन जाता है। समकालीन संदर्भ में भी यह दृष्टि अत्यंत प्रासंगिक है जहाँ मानव जीवन तनाव, मूल्य–संकट एवं आध्यात्मिक रिक्तता से जूझ रहा है; तुलसीदास का यह संदेश कि मोक्ष भीतर की शुद्धि, प्रेम और करुणा से प्राप्त होता है, आधुनिक मनुष्य के लिए मार्गदर्शन का कार्य करता है। इस प्रकार उनकी मोक्ष–दृष्टि धर्म, नैतिकता और आध्यात्मिकता का एक ऐसा समन्वित स्वरूप प्रस्तुत करती है जो जीवन को सार्थक, संतुलित और कल्याणकारी बनाता है।

तुलसीदास की आध्यात्मिकता का समकालीन महत्व

समकालीन भारतीय समाज में जहाँ आध्यात्मिक तनाव, मूल्य–संकट, सामाजिक विघटन तथा व्यक्तिगत अस्थिरता लगातार बढ़ रही है, वहाँ तुलसीदास की आध्यात्मिकता नए सिरे से प्रासंगिक और अर्थपूर्ण बनकर सामने आती है। आधुनिक मनुष्य की व्यस्तता, प्रतिस्पर्धा और तकनीकी दबावों के बीच भक्ति का पुनर्पाठ केवल धार्मिक अनुष्ठान के रूप में नहीं अपितु मानसिक संतुलन, भावनात्मक स्थिरता एवं आंतरिक शांति के एक सशक्त साधन के रूप में उभरता है। तुलसीदास आज भी यह संदेश देते हैं कि आध्यात्मिक साधना का मूल मन की शांति एवं स्थिरता है जो राम–नाम के स्मरण से सहज रूप में प्राप्त होती है। भक्ति के इस पुनर्पाठ का दूसरा पहलू नैतिक पुनरुत्थान से जुड़ा है; आधुनिक समाज में भ्रष्टाचार, क्रोध, हिंसा, अस्थिरता आदि की बढ़ती प्रवृत्ति के बीच तुलसीदास की भक्ति व्यक्ति के चरित्र को नैतिक संतुलन, सहानुभूति, संयम और आत्म–नियंत्रण की ओर प्रेरित करती है। वे कहते हैं "भय बिनु होइ न प्रीति" अर्थात प्रेम और भक्ति का संबंध अनुशासन, विनय और नैतिक दृढ़ता से गहरा है जो आधुनिक मनुष्य हेतु एक आवश्यक जीवन–सूत्र है। करुणा आधारित नेतृत्व और नीति आज की लोकतांत्रिक व्यवस्था में अत्यंत आवश्यक है, जहाँ प्रशासन और शासन का उद्देश मात्र दंड–नीति नहीं बल्कि नागरिकों के प्रति संवेदना, सहानुभूति और न्याय का संतुलित रूप होना चाहिए। तुलसीदास का दृष्टिकोण बताता है कि करुणा नेतृत्व की कमजोरी नहीं अपितु उसकी वास्तविक शक्ति है "दीनदयाल बिरिदु संभारी, हरहु नाथ मम संकट भारी" जिसमें वे करुणा को धर्म की आधारशिला बताते हैं। शासन और नीति–निर्माण में यह करुणा–आधारित दृष्टि भारतीय नैतिकता और मानवीय मूल्यों का वह केंद्र है जो समाज में विश्वास, सुरक्षा और सम्मान की संस्कृति को जन्म देती है। रामराज्य का आदर्श तुलसीदास की इस समझ को और स्पष्ट करता है जहाँ न्याय और करुणा दोनों एक साथ चलते हैं जिसमें शासन व्यवस्था की सफलता का आधार सत्ता नहीं बल्कि सेवा और संवेदना की भावना है। आधुनिक समय में जहाँ राजनीतिक तथा सामाजिक वातावरण में ध्रुवीकरण लगातार बढ़ रहा है तुलसीदास का यह दृष्टिकोण नेतृत्व को संवेदनशील, न्यायप्रिय और लोकहितैषी बनाने की दिशा प्रदान करता है। मोक्ष की अवधारणा का आधुनिक अर्थ तुलसीदास की आध्यात्मिकता का तीसरा महत्त्वपूर्ण पहलू है। आधुनिक मनुष्य के लिए मोक्ष पारलौकिक मुक्ति से अधिक आत्म–विकास, मानसिक शांति एवं आंतरिक स्वतंत्रता का प्रतीक बन गया है। तुलसीदास कहते हैं मोक्ष की वास्तविक अनुभूति संतोष, शांति और आत्मीयता से जुड़ी हुई है। आज के समय में मानसिक तनाव, अवसाद, अकेलापन और असुरक्षा की बढ़ती स्थितियों में तुलसीदास का यह दृष्टिकोण बताता है कि मुक्त होना बाहरी परिस्थितियों को बदलने का विषय नहीं अपितु भीतर के भय, क्रोध, लोभ, ईर्ष्या और अहंकार से मुक्त होने की प्रक्रिया है। शरणागति, नाम–स्मरण और राम–कथा आधुनिक व्यक्ति के लिए ध्यान, मेडिटेशन और माइंडफुलनेस के भारतीय रूप बनकर उभरते हैं जो मन को

केंद्रित, शांत और सकारात्मक बनाते हैं। तुलसीदास का सहज मोक्ष मार्ग यह मानता है कि मुक्ति कठिन तपस्या से नहीं बल्कि प्रेम, करुणा, भक्ति, विनय और परहित की वृत्ति से प्राप्त होती है। यह संदेश आधुनिक समाज के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है जहाँ जीवन की गति तेज है परंतु मन खाली; संसाधन अधिक हैं परंतु संतोष कम; सामाजिक संपर्क अधिक है परंतु आत्मीयता कम। तुलसीदास इस विडंबना से मुक्ति का मार्ग दिखाते हैं और बताते हैं कि आध्यात्मिकता का स्वरूप बाहरी आडंबर नहीं अपितु आंतरिक रूपांतरण है। इस प्रकार तुलसीय आध्यात्मिकता का समकालीन महत्व केवल धार्मिक नहीं बल्कि सांस्कृतिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक भी है। यह आधुनिक मनुष्य को शांति, संयम, करुणा, नैतिकता और आत्मिक स्वतंत्रता की दिशा में ले जाने वाला एक संपूर्ण जीवन–दर्शन प्रस्तुत करती है।

निष्कर्ष

तुलसीदास की आध्यात्मिक मूल–धाराएँ भक्ति, करुणा और मोक्ष के उस समन्वित दर्शन को रेखांकित करती हैं, जो भारतीय आध्यात्मिक परंपरा का सबसे जीवंत और मानवीय स्वरूप प्रस्तुत करता है। तुलसीदास के लिए भक्ति केवल ईश्वर–अनुरक्ति नहीं अपितु मनुष्य के भीतर नैतिकता, विनय, सेवा और प्रेम को जागृत करने वाली शक्ति है; करुणा धर्म का मूल है और मोक्ष जीवन की आंतरिक शुद्धि तथा आत्मिक संतुलन की अवस्था। उनके काव्य में यह तीनों तत्व एक दूसरे से अलग नहीं, एक सूक्ष्म संबंध में जुड़े हुए हैं भक्ति बिना करुणा अधूरी है, करुणा बिना नैतिकता संभव नहीं, एवं नैतिकता बिना मोक्ष की अनुभूति नहीं। तुलसीदास का यह दृष्टिकोण कि "परहित सरिस धर्म नहिं भाई" और कि ईश्वर–प्राप्ति का मार्ग प्रेम, दया और विनम्रता से होकर गुजरता है, आधुनिक समाज के लिए गहरी प्रासंगिकता रखता है। आज के समय में जब सामाजिक तनाव, मूल्य–संकट और आध्यात्मिक रिक्तता बढ़ रही है, तुलसीदास की भक्ति व्यक्ति को भीतर से संयत करती है, करुणा उसे दूसरों के प्रति संवेदनशील बनाती है, और मोक्ष की अवधारणा उसे आत्म–विकास तथा मानसिक शांति की दिशा में प्रेरित करती है। समकालीन भारत में तुलसीय दर्शन केवल धार्मिक परंपरा की धरोहर नहीं बल्कि जीवन और समाज को संतुलित रखने वाला एक सशक्त साधन है एक ऐसा मार्गदर्शन, जो भक्ति को मानवता से, करुणा को न्याय से, और मोक्ष को आत्मिक स्वतंत्रता से जोड़कर आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना अपने समय में था।

सन्दर्भ सूची

1. चतुरवेदी, बी. (2011). भक्ति लिटरेचर ऐंड इंडियन स्पिरिचुअल ट्रैडिशन. वाणी प्रकाशन.
2. द्विवेदी, एच. (1999). तुलसी ऐंड हिज टाइम्स. राजकमल प्रकाशन.
3. हॉले, जे. एस. (2015). अ स्टॉर्म ऑफ सॉन्ग्स: इंडिया ऐंड द आइडिया ऑफ द भक्ती मूवमेंट. हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
4. मित्र, डी. पी. (2023). वैष्णव धर्म: उत्पत्ति, विकास एवं समकालीन चुनौतियाँ. मानव, 16(2), 60–68.
5. पांडेय, आर. (2007). तुलसीदास: द पोएट सेंट. मोतीलाल बनारसीदास.
6. पोलॉक, एस. (2006). द लैंग्वेज ऑफ द गॉड्स इन द वर्ल्ड ऑफ मेन. यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफ़ोर्निया प्रेस.
7. मित्र, डी. पी. (2024). काशी में रामानंदी संप्रदायः परंपरा, आधुनिकीकरण एवं शहरी प्रभाव. मानव.
8. शर्मा, आर. (2002). रामचरितमानस: ए कल्चरल स्टडी. मोतीलाल बनारसीदास.
9. मित्र, डी. पी. (2023). भक्ति मूवमेंट इन नॉर्दर्न इंडिया: द केस ऑफ वैष्णविज़्म. मध्य भारती.
10. शुक्ल, आर. (2003). भक्ती आंदोलन्स ऐंड नॉर्थ इंडियन डिवोशनल कल्चर. राजकमल प्रकाशन.
11. तुलसीदास. (2005). रामचरितमानस (गीता प्रेस संस्करण). गीता प्रेस.
12. तुलसीदास. (2008). विनय पत्रिका (गीता प्रेस संस्करण). गीता प्रेस.
13. तुलसीदास. (2010). कवितावली (गीता प्रेस संस्करण). गीता प्रेस.
14. तुलसीदास. (2007). दोहावली (क्रिटिकल संस्करण). गीता प्रेस.
15. तुलसीदास. (2011). गीतावली (गीता प्रेस संस्करण). गीता प्रेस.